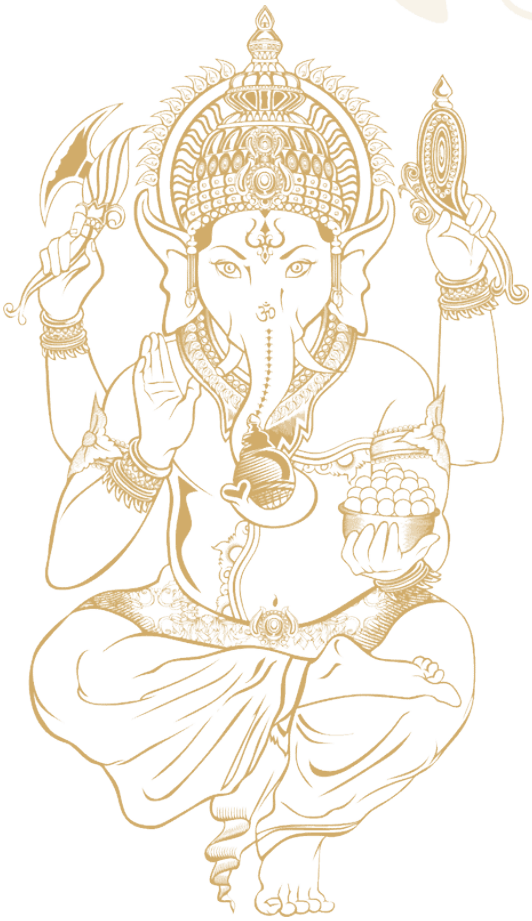

Mr. Sahil agrawal

19 Mar 2015

01:50 PM

Ahmedabad

Model: Web-MyKundli

Order No: 119374601

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**19/03/2015**
दिन	गुरुवार
जन्म समय	**13:50:00 घंटे**
इष्ट	17:42:06 घटी
स्थान	**Ahmedabad**
राज्य	Gujarat
देश	India

अक्षांश	23:03:00 उत्तर
रेखांश	72:40:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:39:20 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	13:10:40 घंटे
वेलान्तर	-00:07:54 घंटे
साम्पातिक काल	00:56:56 घंटे
सूर्योदय	06:45:09 घंटे
सूर्यास्त	18:49:41 घंटे
दिनमान	12:04:32 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	वसन्त
सूर्य के अंश	04:20:15 मीन
लग्न के अंश	28:05:33 मिथुन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	मिथुन - बुध
राशि-स्वामी	**कुम्भ - शनि**
नक्षत्र-चरण	**शतभिषा - 4**
नक्षत्र स्वामी	राहु
योग	शुभ
करण	शकुनि
गण	राक्षस
योनि	अश्व
नाड़ी	आद्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मेष
युँजा	अन्त्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	सू-सूरज
पाया(राशि-नक्षत्र)	रजत - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मीन

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1936	फाल्गुन	28
पंजाबी	संवत : 2071	चैत्र	6
बंगाली	सन् : 1421	चैत्र	4
तमिल	संवत : 2071	पंगुनी	5
केरल	कोल्लम : 1190	मीनम	5
नेपाली	संवत : 2071	चैत्र	5
चैत्रादि	संवत : 2071	चैत्र	कृष्ण 14
कार्तिकादि	संवत : 2071	फाल्गुन	कृष्ण 14

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 14
तिथि समाप्ति काल _____: 18:48:02
जन्म तिथि _____: 14
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: शतभिषा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 14:46:49 घंटे
जन्म योग _____: शतभिषा
सूर्योदय कालीन योग ____: साध्य
योग समाप्ति काल _____: 13:13:54 घंटे
जन्म योग _____: शुभ
सूर्योदय कालीन करण ____: विष्टि
करण समाप्ति काल _____: 08:38:47 घंटे
जन्म करण _____: शकुनि
भयात _____: 50:29:27
भभोग _____: 52:51:29
भोग्य दशा काल _____: राहु 0 वर्ष 9 मा 21 दि

घात चक्र

मास _____: चैत्र
तिथि _____: 3-8-13
दिन _____: गुरुवार
नक्षत्र _____: आर्द्रा
योग _____: गण्ड
करण _____: किंस्तुघ्न
प्रहर _____: 3
वर्ग _____: श्वान
लग्न _____: मिथुन
सूर्य _____: वृष
चन्द्र _____: धनु
मंगल _____: मिथुन
बुध _____: वृष
गुरु _____: कर्क
शुक्र _____: सिंह
शनि _____: मेष
राहु _____: कन्या

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

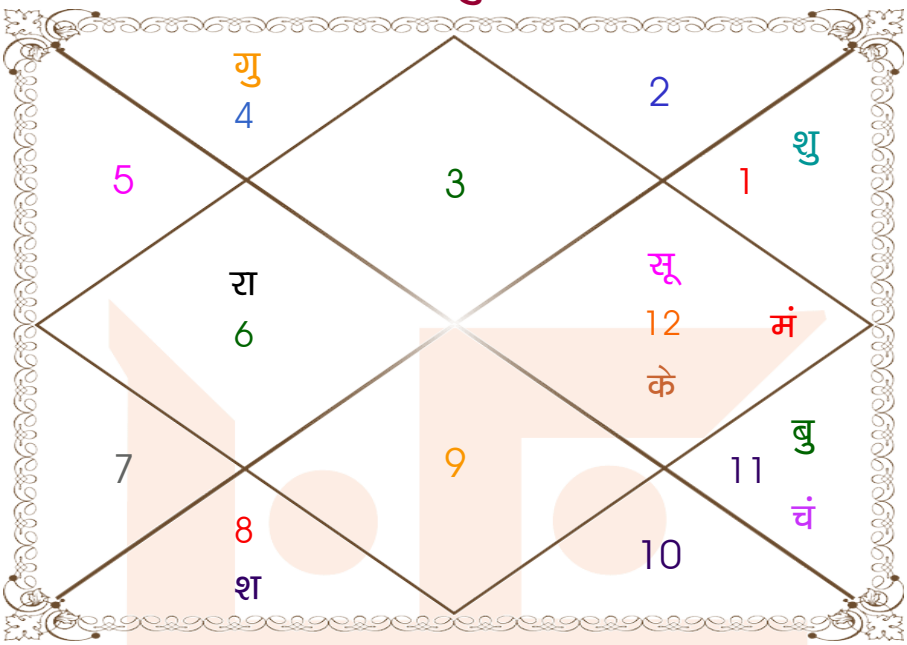

चन्द्र कुंडली

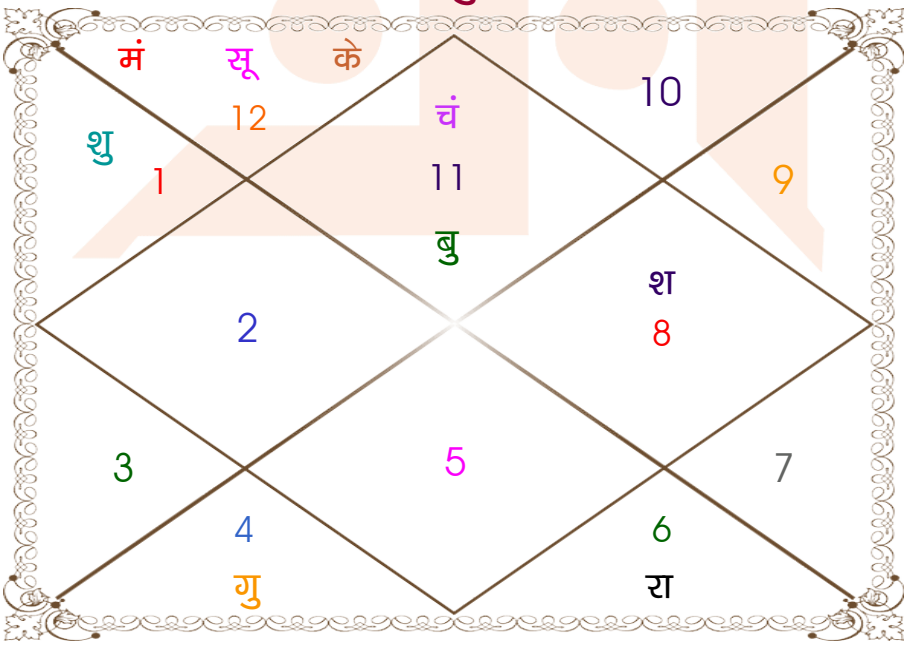

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

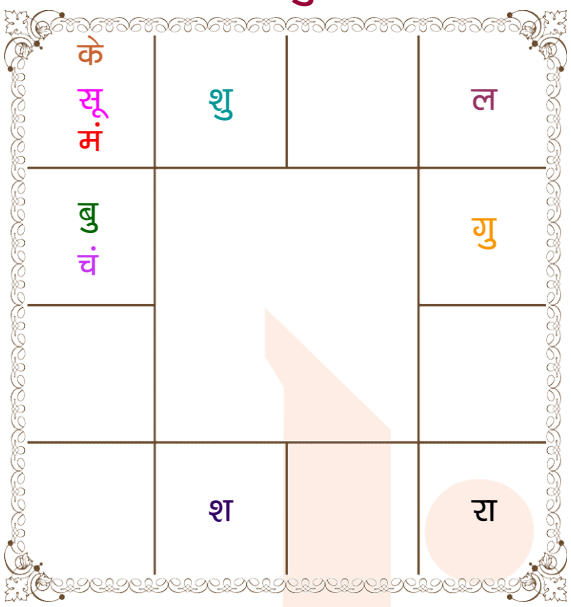

लग्न कुंडली

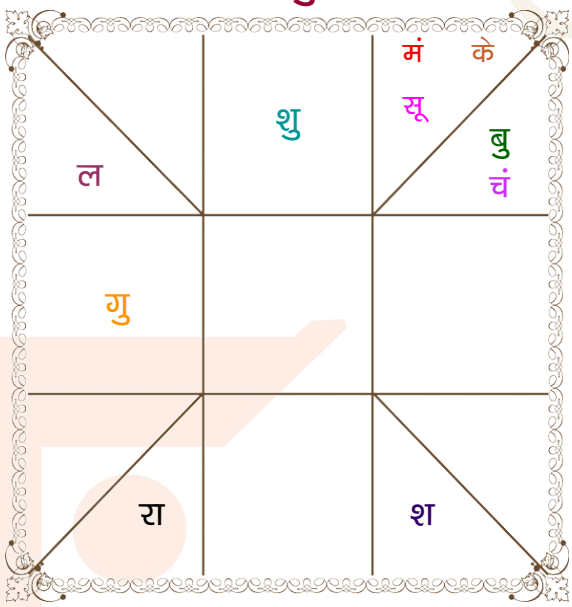

विंशोत्तरी
राहु 0वर्ष 9मा 21दि

राहु

19/03/2015

09/01/2118

राहु	08/01/2016
गुरु	08/01/2032
शनि	08/01/2051
बुध	08/01/2068
केतु	08/01/2075
शुक्र	08/01/2095
सूर्य	09/01/2101
चन्द्र	09/01/2111
मंगल	09/01/2118

योगिनी
धान्या 0वर्ष 1मा 18दि

उल्का

07/05/2024

07/05/2030

उल्का	07/05/2025
सिद्धा	07/07/2026
संकटा	06/11/2027
मंगला	06/01/2028
पिंगला	07/05/2028
धान्या	05/11/2028
भ्रामरी	07/07/2029
भद्रिका	07/05/2030

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मिथु	28:05:33	316:01:58	पुनर्वसु	3	7	बुध	गुरु	शुक्र	---
सूर्य			मीन	04:20:15	00:59:42	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	मित्र राशि
चंद्र			कुंभ	19:24:04	15:10:41	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	मंगल	सम राशि
मंगल			मीन	26:43:22	00:45:04	रेवती	4	27	गुरु	बुध	गुरु	मित्र राशि
बुध			कुंभ	15:31:19	01:36:55	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	शुक्र	सम राशि
गुरु	व		कर्क	19:10:13	00:03:48	आश्लेषा	1	9	चंद्र	बुध	केतु	उच्च राशि
शुक्र			मेष	08:14:45	01:12:18	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	गुरु	सम राशि
शनि	व		वृश्चि	10:50:26	00:00:29	अनुराधा	3	17	मंगल	शनि	सूर्य	शत्रु राशि
राहु	व		कन्या	15:54:23	00:00:50	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	शनि	मूलत्रिकोण
केतु	व		मीन	15:54:23	00:00:50	उ०भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	गुरु	मूलत्रिकोण
हर्ष			मीन	21:21:11	00:03:19	रेवती	2	27	गुरु	बुध	शुक्र	---
नेप			कुंभ	13:59:03	00:02:10	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	बुध	---
प्लूटो			धनु	21:15:51	00:00:52	पूर्वाषाढ़ा	3	20	गुरु	शुक्र	गुरु	---
दशम भाव			मीन	21:23:01	--	रेवती	--	27	गुरु	बुध	शुक्र	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:04:14

लग्न-चलित

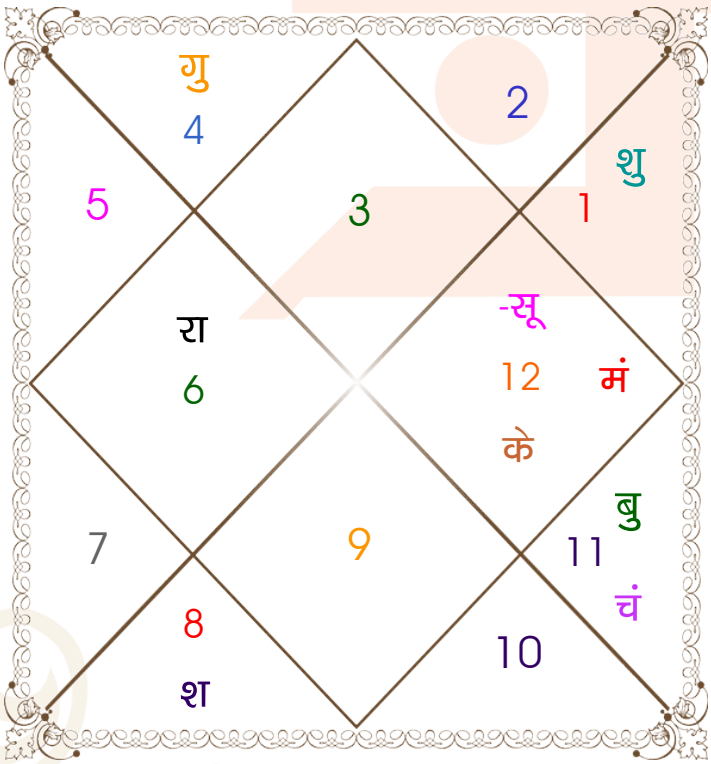

चन्द्र कुंडली

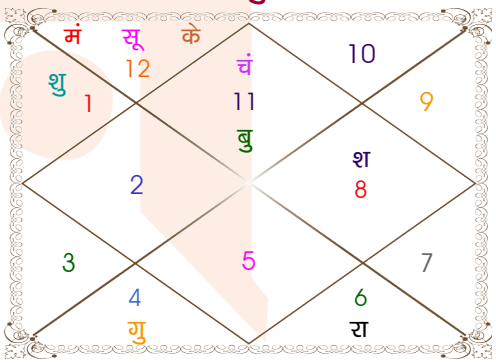

नवमांश कुंडली

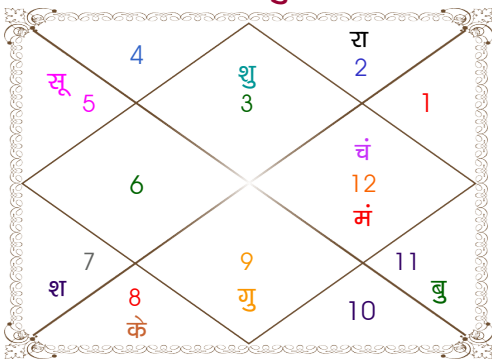

MANWENDRA SHARMA

Nepal Adhyatimk Jyotish Sansthan

9851036217, 9801136217

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मिथुन	11:58:28	मिथुन	28:05:33
2	कर्क	11:58:28	कर्क	25:51:22
3	सिंह	09:44:17	सिंह	23:37:12
4	कन्या	07:30:07	कन्या	21:23:01
5	तुला	07:30:07	तुला	23:37:12
6	वृश्चिक	09:44:17	वृश्चिक	25:51:22
7	धनु	11:58:28	धनु	28:05:33
8	मकर	11:58:28	मकर	25:51:22
9	कुम्भ	09:44:17	कुम्भ	23:37:12
10	मीन	07:30:07	मीन	21:23:01
11	मेष	07:30:07	मेष	23:37:12
12	वृष	09:44:17	वृष	25:51:22

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मिथुन	28:05:33
2	कर्क	22:21:07
3	सिंह	19:47:47
4	कन्या	21:23:01
5	तुला	25:11:31
6	वृश्चिक	27:52:43
7	धनु	28:05:33
8	मकर	22:21:07
9	कुम्भ	19:47:47
10	मीन	21:23:01
11	मेष	25:11:31
12	वृष	27:52:43

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा

चलित कुंडली

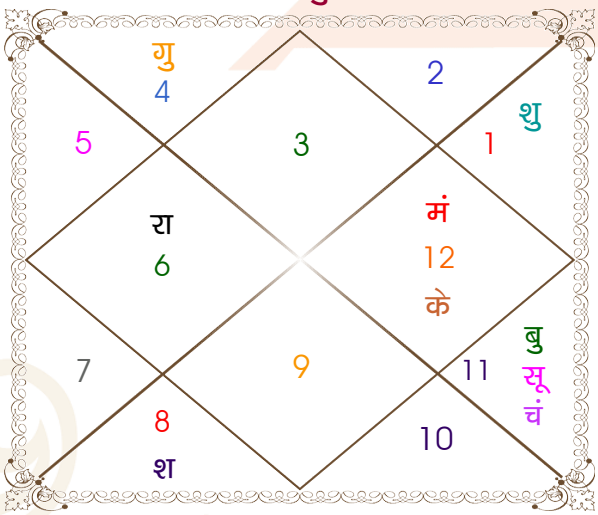

भाव कुंडली

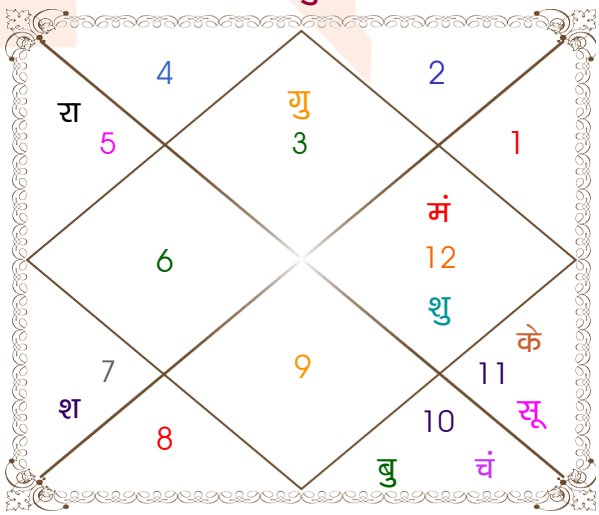

MANWENDRA SHARMA
Nepal Adhyatimk Jyotish Sansthan
9851036217, 9801136217

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 0 वर्ष 9 मास 21 दिन

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
19/03/2015		08/01/2016		08/01/2032		08/01/2051		08/01/2068	
08/01/2016		08/01/2032		08/01/2051		08/01/2068		08/01/2075	
	00/00/0000	गुरु	26/02/2018	शनि	11/01/2035	बुध	06/06/2053	केतु	06/06/2068
	00/00/0000	शनि	08/09/2020	बुध	20/09/2037	केतु	03/06/2054	शुक्र	06/08/2069
	00/00/0000	बुध	15/12/2022	केतु	30/10/2038	शुक्र	03/04/2057	सूर्य	11/12/2069
	00/00/0000	केतु	21/11/2023	शुक्र	30/12/2041	सूर्य	07/02/2058	चंद्र	13/07/2070
	00/00/0000	शुक्र	22/07/2026	सूर्य	12/12/2042	चंद्र	10/07/2059	मंगल	09/12/2070
	00/00/0000	सूर्य	10/05/2027	चंद्र	12/07/2044	मंगल	06/07/2060	राहु	27/12/2071
	00/00/0000	चंद्र	08/09/2028	मंगल	21/08/2045	राहु	23/01/2063	गुरु	02/12/2072
	19/03/2015	मंगल	15/08/2029	राहु	27/06/2048	गुरु	30/04/2065	शनि	11/01/2074
मंगल	08/01/2016	राहु	08/01/2032	गुरु	08/01/2051	शनि	08/01/2068	बुध	08/01/2075

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
08/01/2075		08/01/2095		09/01/2101		09/01/2111		09/01/2118	
08/01/2095		09/01/2101		09/01/2111		09/01/2118		20/03/2135	
शुक्र	10/05/2078	सूर्य	28/04/2095	चंद्र	09/11/2101	मंगल	07/06/2111	राहु	21/09/2120
सूर्य	10/05/2079	चंद्र	27/10/2095	मंगल	10/06/2102	राहु	25/06/2112	गुरु	15/02/2123
चंद्र	08/01/2081	मंगल	03/03/2096	राहु	10/12/2103	गुरु	01/06/2113	शनि	22/12/2125
मंगल	10/03/2082	राहु	26/01/2097	गुरु	10/04/2105	शनि	11/07/2114	बुध	10/07/2128
राहु	10/03/2085	गुरु	14/11/2097	शनि	09/11/2106	बुध	08/07/2115	केतु	29/07/2129
गुरु	09/11/2087	शनि	27/10/2098	बुध	10/04/2108	केतु	04/12/2115	शुक्र	28/07/2132
शनि	08/01/2091	बुध	03/09/2099	केतु	09/11/2108	शुक्र	02/02/2117	सूर्य	22/06/2133
बुध	08/11/2093	केतु	08/01/2100	शुक्र	11/07/2110	सूर्य	10/06/2117	चंद्र	22/12/2134
केतु	08/01/2095	शुक्र	09/01/2101	सूर्य	09/01/2111	चंद्र	09/01/2118	मंगल	20/03/2135

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल राहु 0 वर्ष 9 मा 20 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु	
21/11/2023		22/07/2026		10/05/2027		08/09/2028		15/08/2029	
22/07/2026		10/05/2027		08/09/2028		15/08/2029		08/01/2032	
शुक्र	01/05/2024	सूर्य	05/08/2026	चंद्र	19/06/2027	मंगल	28/09/2028	राहु	24/12/2029
सूर्य	19/06/2024	चंद्र	30/08/2026	मंगल	18/07/2027	राहु	18/11/2028	गुरु	20/04/2030
चंद्र	08/09/2024	मंगल	16/09/2026	राहु	29/09/2027	गुरु	02/01/2029	शनि	06/09/2030
मंगल	04/11/2024	राहु	30/10/2026	गुरु	03/12/2027	शनि	25/02/2029	बुध	08/01/2031
राहु	30/03/2025	गुरु	07/12/2026	शनि	18/02/2028	बुध	15/04/2029	केतु	28/02/2031
गुरु	07/08/2025	शनि	23/01/2027	बुध	27/04/2028	केतु	05/05/2029	शुक्र	24/07/2031
शनि	08/01/2026	बुध	05/03/2027	केतु	25/05/2028	शुक्र	30/06/2029	सूर्य	06/09/2031
बुध	26/05/2026	केतु	22/03/2027	शुक्र	15/08/2028	सूर्य	17/07/2029	चंद्र	18/11/2031
केतु	22/07/2026	शुक्र	10/05/2027	सूर्य	08/09/2028	चंद्र	15/08/2029	मंगल	08/01/2032

शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
08/01/2032		11/01/2035		20/09/2037		30/10/2038		30/12/2041	
11/01/2035		20/09/2037		30/10/2038		30/12/2041		12/12/2042	
शनि	30/06/2032	बुध	30/05/2035	केतु	14/10/2037	शुक्र	11/05/2039	सूर्य	16/01/2042
बुध	03/12/2032	केतु	27/07/2035	शुक्र	20/12/2037	सूर्य	08/07/2039	चंद्र	14/02/2042
केतु	05/02/2033	शुक्र	07/01/2036	सूर्य	10/01/2038	चंद्र	12/10/2039	मंगल	06/03/2042
शुक्र	07/08/2033	सूर्य	25/02/2036	चंद्र	12/02/2038	मंगल	19/12/2039	राहु	27/04/2042
सूर्य	01/10/2033	चंद्र	17/05/2036	मंगल	08/03/2038	राहु	09/06/2040	गुरु	13/06/2042
चंद्र	01/01/2034	मंगल	13/07/2036	राहु	08/05/2038	गुरु	10/11/2040	शनि	07/08/2042
मंगल	06/03/2034	राहु	08/12/2036	गुरु	01/07/2038	शनि	12/05/2041	बुध	25/09/2042
राहु	18/08/2034	गुरु	18/04/2037	शनि	03/09/2038	बुध	23/10/2041	केतु	15/10/2042
गुरु	11/01/2035	शनि	20/09/2037	बुध	30/10/2038	केतु	30/12/2041	शुक्र	12/12/2042

शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध	
12/12/2042		12/07/2044		21/08/2045		27/06/2048		08/01/2051	
12/07/2044		21/08/2045		27/06/2048		08/01/2051		06/06/2053	
चंद्र	29/01/2043	मंगल	05/08/2044	राहु	24/01/2046	गुरु	28/10/2048	बुध	13/05/2051
मंगल	04/03/2043	राहु	04/10/2044	गुरु	12/06/2046	शनि	24/03/2049	केतु	03/07/2051
राहु	29/05/2043	गुरु	27/11/2044	शनि	24/11/2046	बुध	02/08/2049	शुक्र	27/11/2051
गुरु	15/08/2043	शनि	30/01/2045	बुध	20/04/2047	केतु	25/09/2049	सूर्य	10/01/2052
शनि	14/11/2043	बुध	29/03/2045	केतु	20/06/2047	शुक्र	26/02/2050	चंद्र	23/03/2052
बुध	04/02/2044	केतु	21/04/2045	शुक्र	10/12/2047	सूर्य	13/04/2050	मंगल	13/05/2052
केतु	09/03/2044	शुक्र	28/06/2045	सूर्य	31/01/2048	चंद्र	29/06/2050	राहु	22/09/2052
शुक्र	13/06/2044	सूर्य	18/07/2045	चंद्र	27/04/2048	मंगल	22/08/2050	गुरु	17/01/2053
सूर्य	12/07/2044	चंद्र	21/08/2045	मंगल	27/06/2048	राहु	08/01/2051	शनि	06/06/2053

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	1
भाग्यांक	3
मित्र अंक	1, 4, 8, 9, 3
शत्रु अंक	5, 6
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	बुध, शुक्र, शनि
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र, शनि
मित्र राशि	वृष, तुला
मित्र लग्न	कन्या, कुम्भ, मेष
अनुकूल देवता	कुबेर
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	भाग्योदय, स्वास्थ्य, सुख
गोमेद	राहु	80%	सुख, भाग्योदय
मोती	चंद्र	75%	भाग्योदय, धन
लहसुनिया	केतु	71%	व्यावसायिक उन्नति, धन
पुखराज	गुरु	69%	धन, दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
हीरा	शुक्र	69%	धनार्जन, कम खर्च, सन्तति सुख
माणिक्य	सूर्य	64%	व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
नीलम	शनि	41%	शत्रु व रोग, दुर्घटना, नेष्ट भाग्य
मूंगा	मंगल	38%	व्यावसायिक हानि, हानि, शत्रु व रोग

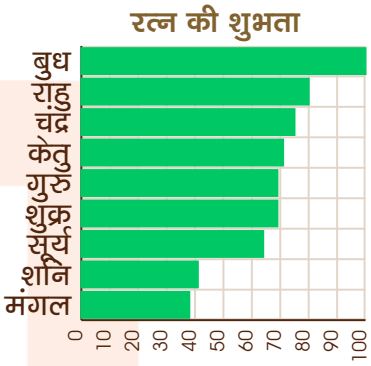

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
राहु	08/01/2016	52%	62%	12%	100%	69%	75%	52%	93%	58%
गुरु	08/01/2032	70%	81%	50%	95%	81%	56%	41%	80%	71%
शनि	08/01/2051	52%	62%	12%	100%	69%	75%	58%	86%	58%
बुध	08/01/2068	70%	62%	38%	100%	69%	75%	41%	80%	71%
केतु	08/01/2075	52%	62%	50%	100%	69%	75%	16%	68%	83%
शुक्र	08/01/2095	52%	62%	38%	100%	69%	81%	52%	86%	77%
सूर्य	09/01/2101	77%	81%	50%	100%	75%	56%	16%	68%	58%
चंद्र	09/01/2111	70%	88%	38%	100%	69%	69%	41%	68%	58%
मंगल	09/01/2118	70%	81%	56%	95%	75%	69%	41%	68%	77%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	30/08/2068-04/11/2070	----------	----------

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	18/07/2088-31/10/2088	05/04/2089-19/09/2090	25/10/2090-21/05/2091
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/10/2097-02/05/2098	20/06/2098-26/12/2099	17/03/2100-16/09/2100

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	दुर्घटना से बचाव
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	भाग्योदय
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	व्यावसाय
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	कम खर्च
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	सुख

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति दशम भाव में है। यह भाव कर्म का मुख्य प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप एक कर्मठ एवं पराक्रमी व्यक्ति होंगे। अपने कार्य क्षेत्र में सर्वदा उन्नतिशील रहेंगे। साथ ही आप अपनी बुद्धि एवं योग्यता के बल पर किसी उच्च प्रशासनिक पद इंजीनियरिंग, मेडिकल या होटल आदि के क्षेत्र में विशिष्ट सफलता अर्जित करेंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे जिससे समाज में आप एक आदरणीय पुरुष समझें जाएंगे । आप अपने कार्यों के द्वारा विशिष्ट सम्मान एवं ख्याति भी अर्जित करेंगे। आपके पिता का स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा आपको वे पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आप भी उनकी आज्ञा का अनुपालन करेंगे तथा यत्नपूर्वक उनकी सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

दशम भाव से मंगल की दृष्टि प्रथम भाव पर रहेगी इसके प्रभाव से आप यदा कदा पित या गर्मी से उत्पन्न रोगों के द्वारा कष्ट की अनुभूति कर सकते हैं लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। सामान्यतया आप परिश्रम एवं उत्साह से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। चतुर्थ भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों को अर्जित करेंगे तथा आनन्द पूर्वक उनका उपभोग भी करेंगे। जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगे परन्तु माता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आप उनको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। पंचम भाव पर मंगल की दृष्टि से संतति से सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा साथ ही संतति की प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। आपकी बुद्धि में भी यदा कदा उग्रता का भाव विद्यमान रहेगा लेकिन आप अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमत्ता से सम्पन्न करेंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको न्यूनाधिक सहयोग समय समय पर प्राप्त होता रहेगा।

इस प्रकार दशमस्थ मंगल के प्रभाव से आप एक प्रभावी व्यक्ति होंगे। जीवन में

धनऐश्वर्य एवं सुख संसाधनों से सर्वदा युक्त रहेंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जनों का आधुनिक परिवेश में लालन पालन करने में समर्थ रहेंगे जिससे परिवार में शान्ति तथा सन्तुष्टि रहेगी। इसके अतिरिक्त सभी लोग आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुडली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभन्वित होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

चन्द्र

नवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, विद्याप्रिय, चंचल, न्यायी, प्रवास-प्रिय, कार्यशील,धर्मात्मा. सन्तति-सम्पत्तियुक्त सुखी, साहसी एवं अल्पभ्रातृवान् होता है।

कुम्भ राशि में चन्द्रमा हो तो जातक, उन्मत, सूक्ष्मदेही, शिल्पी, नीति दक्ष, दूरदर्शी, विद्वान्, गुप्तविद्याओं में रुचि, अच्छा अन्तर्ज्ञान, साधना करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति वाला एवं मध्यावस्था में संन्यास के प्रति झुकाव होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। आपके शुभ प्रभाव से उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपकी सुख संसाधनों के प्रति वे चिन्तित रहेंगी तथा प्रयत्न पूर्वक आपको इन सुख संसाधनों का उपभोग करायेंगी। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा। इसके अतिरिक्त उन्हीं की सहायता एवं सहयोग से आप आवश्यक सुखसंसाधनों को भी प्राप्त करेंगे।

आप भी उनके आज्ञाकारी होंगे तथा पूर्ण रूप से उनका हार्दिक सम्मान करेंगे। जीवन में उनको पूर्ण सुख सुविधा प्रदान करने के लिए आप यत्नशील रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर होंगे तथा यदा कदा ही कोई मतभेद रहेंगे अन्यथा एक दूसरें से सहमत ही रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए सामान्य शुभ रहेंगे।

मंगल

दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, सन्तति कष्टवाला, धनवान्, सुखी, उत्तम-वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

मीन राशि में मंगल हो तो जातक गौवरवर्ण, कामुक, आज्ञाकारी गन्दा, अस्थिर जीवन, रोगी, प्रवासी, मान्त्रीक, बन्धु-द्वेषी, नास्तिक, हठी, धूर्त और वाचाल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यों में भी वे आपको सहपोग प्रदान करगै।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

बुध

नवमभाव में बुध हो तो जातक विद्वान् लेखक, ज्योतिषी, धर्मभीरु, व्यवसाय प्रिय, भाग्यवान्, सम्पादक, गवैया, कवि एवं सदाचारी होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

गुरु

द्वितीयभाव में गुरु हो तो जातक मधुरभाषी, सम्पत्ति और सन्ततिवान्, सुन्दरशरीर, सदाचारी, पुण्यात्मा, सुकार्यरत, लोकमान्य, राज्यमान्य, व्यवसायी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं भाग्यवान् होता है।

कर्क राशि में गुरु हो तो जातक सदाचारी, विद्वान्, सत्यवक्ता महायशस्वी, साम्यवादी, सुधारक, योगी, लोकमान्य, सुखी, धनी, नेता, कुशाबुद्धि एवं वफादार होता है।

शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

मेष राशि में शुक्र हो तो जातक स्वप्न जगत में विचारने वाला, आवेशपूर्ण स्वभाव, अस्थिरमन, दुःखी, बुद्धिमान्, आरामतलब, दुराचारी, परस्त्रीरत, झगड़ालू विश्वास हीन एवं अधिक खर्च करने वाला होता है।

शनि

षष्ठभाव में शनि हो तो जातक बलवान्, आचारहीन, व्रणी, जातिविरोधी, श्वासरोगी, कण्ठरोगी, योगी, शत्रुहन्ता भोगी एवं कवि होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरघ्दय, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, क्रोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

राहु

चतुर्थभाव में राहु हो तो जातक असन्तोषी, दुखी, अल्पभाषी, मिथ्याचारी, उदरव्याधियुक्त, कपटी, मातृक्लेशयुक्त एवं क्रूर होता है।

कन्या राशि में राहु हो तो जातक लोकप्रिय, मधुरभाषी, कविलेखक, गवैया एवं धनी होता है।

केतु

दशम भाव में केतु हो तो जातक अभिमानी, परिश्रमशील मूर्ख, पितृद्वेषी, दुर्भागी, संन्यास लेना एवं योगी होता है।

मीन राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमी, धार्मिक प्रवृत्तिवाला, कर्णरोगी, प्रवासी, चंचल और कार्यपरायण होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- गुरु
(08/01/2016 - 08/01/2032)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 08/01/2016 को आरम्भ तथा 08/01/2032 को समाप्त होगी। इसकी अवधि सोलह वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में गुरु द्वितीय भाव में स्थित है। इस तरह वह भाव को शक्ति प्रदान कर रहा है। द्वितीय भाव सम्पत्ति, भाग्य, दायीं आँख, स्मरणशक्ति, कल्पना, जिह्वा, दाँत, दाढ़ी और पारिवारिक सदस्यों का द्योतक है। गुरु एक शुभ ग्रह है जो आपकी जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित है। इसकी छठे, आठवे और दसवें भाव पर दृष्टि है और इन भावों पर इसका शुभ प्रभाव है। अतः 16 वर्षों की यह दशा सुखमय और समृद्धिशाली होगी।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी गुरु की द्वितीय भाव में स्थिति और वहाँ से (दशम भाव के अतिरिक्त) छठे तथा 8वें भावों अर्थात् रोग और शत्रु के भावों तथा दीर्घायु के भावों पर इसकी दृष्टि के कारण आपको कोई गम्मीर बीमारी नहीं होगी और आप इस दशा के दौरान स्वस्थ रहेंगे।

अर्थ-सम्पत्ति :

गुरु की द्वितीय भाव में स्थिति और दसवें भाव (6ठे तथा 8वें भावों के अतिरिक्त) पर इसकी दृष्टि के कारण इस दशा के दौरान आप चल-अचल सम्पत्ति प्राप्त करेंगे और आराम तथा विलासिता की वस्तुओं पर व्यय करेंगे।

व्यवसाय :

गुरु की द्वितीय अर्थात धन-सम्पत्ति के भाव में स्थिति और वहाँ से (6ठे तथा 8वें भावों के अतिरिक्त) दसवें अर्थात् व्यवसाय तथा जीवन चर्चा के भाव पर इसकी दृष्टि के कारण आप अपने व्यवसाय में प्रतिष्ठित होंगे। आप कवि, महान् लेखक, ज्योतिषी अथवा वैज्ञानिक हो सकते हैं। आप सफल, प्रतिष्ठित और भाग्यशाली होंगे। आप किसी से झगड़ा नहीं करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

गुरु के कारण आपका पारिवारिक जीवन सुखमय और सद्भावपूर्ण रहेगा। आपके जीवनसाथी आपके सहयोगी और सहायक होंगे। आपके बच्चे आज्ञाकारी और सुशील होंगे। 16 वर्ष की इस दशा के दौरान आपको कोई पारिवारिक समस्या नहीं होगी और आप पारिवारिक जीवन का आनन्द उठाएंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

ज्ञान की भूख के कारण आप विभिन्न साहित्यों के अध्ययन में रत रहेंगे।

अंर्तदशा :- गुरु - शुक्र
(21/11/2023 - 22/07/2026)

आपके लिए बृहस्पति महादशा 08/01/2016 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा शुक्र की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 21/11/2023 को प्रारंभ होकर 22/07/2026 के समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, सुख और कला का कारक है।

इस अवधि में आप सफल रहेंगे। किस्मत चमकेगी। धन और सब सुख-साधन उपलब्ध होंगे। लोकप्रियता बढ़ेगी। बड़े भाई-बहनों से संबंध मधुर रहेंगे। समाज में सफलता मिलेगी; जीवन आमोद-प्रमोद में गुज़रेगा। धनागम होगा; वाहनसुख संभव है। अगर विवाहित हैं तो शिशु का जन्म हो सकता है। विवाहित जीवन सुखी होगा। शिक्षा उत्तम होगी और प्रगति के अवसर मिलेंगे।

आपके जीवनसाथी के पद और सम्मान में वृद्धि होगी। आपके पिता को सफलता आसानी से मिल जाएगी। माता के जीवन में अचानक कुछ घट सकता है।

आपके भाई-बहनों के लिए धन, सामूहिक कार्यों और परीक्षा में सफलता का संकेत है।

आपकी संतान अगर कार्यरत है तो साझेदारी से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत है तो कार्यालय में वातावरण मधुर रहेगा। परामर्शदाताओं को विभिन्न माध्यमों से लाभ होगा। व्यापारियों का लाभ उत्तम होगा; धनी बनेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कानों और पैरों में मामूली शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र मंत्र का जाप करें।

ॐ शुं शुक्राय नमः

अंर्तदशा :- गुरु - सूर्य
(22/07/2026 - 10/05/2027)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 08/01/2016 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 9 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 22/07/2026 को प्रारंभ होकर 10/05/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, पिता, कार्यक्षमता और स्वास्थ्य का कारक है।

इस अवधि में आप कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे; उच्चपद प्राप्त होगा। स्पर्धियों और बाधाओं पर विजय होगी। सब कार्यों में कामयाबी मिलेगी। राजनीति में सफल हो सकते हैं। सरकार से लाभ हो सकता है। माता-पिता और बड़ों से लाभ होगा। बहुत से मित्र होंगे, जिनसे लाभ होगा, शिक्षा उत्तम होगी। समाज में सफलता मिलेगी; भाग्य साथ देगा।

आपके जीवनसाथी अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। आपके पिता को कई माध्यमों से धनलाभ होगा। माता को साझेदारी से लाभ होगा, व्यापार में धनार्जन उत्तम होगा। आपके भाई-बहनों के लिए परिवर्तन, अप्रत्याशित धन, यात्रा, अधिक खर्चों का संकेत है।

आपकी संतान स्पर्धा में सफल होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो शत्रुओं पर विजय होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यों में सफलता मिलेगी, किस्मत उत्तम रहेगी। परामर्शदाता उत्कृष्टता प्राप्त करेंगे। व्यापारियों को निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पित्त की मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- गुरु - चन्द्र
(10/05/2027 - 08/09/2028)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 08/01/2016 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 4 मास है। आपके लिए यह 10/05/2027 को आरंभ होकर 08/09/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र सुंदरता, स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य और भावनाओं का कारक है।

इस अवधि में आपकी लाभदायक दूरस्थ स्थान की यात्रा हो सकती है। धर्म में रुचि होगी। पिता से संबंध उत्तम रहेंगे। भाग्य बहुत अच्छा रहेगा। संतान से खुशियां मिलेंगी। कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। कला और संगीत में रुचि होगी। वाक्शक्ति उत्तम रहेगी। उत्तम वस्त्र, आभूषण और विलास के साधन उपलब्ध होंगे।

आपके जीवनसाथी सफलता प्राप्त करेंगे; खास तौर पर संचार माध्यम में सफल हो सकते हैं। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, धनी बनेंगे। माता विरोधियों पर विजयी होंगी। आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता, सुखी विवाहित जीवन का संकेत है। अगर अविवाहित हैं तो विवाह हो सकता है। उनके बहुत से मित्र होंगे।

आपकी संतान परीक्षा में सफल होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो नींव सुदृढ़ होगी; जनसंपर्क का कार्य मिल सकता है ; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को कुछ हानि हो सकती है; यात्रा संभव है। व्यापारियों को यथास्थिति बनाये रखने के लिए अधिक परिश्रम करना होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए दूध, जल और चांदी का दान करें।

अंर्तदशा :- गुरु - मंगल
(08/09/2028 - 15/08/2029)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 08/01/2016 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 08/09/2028 को प्रारंभ होकर वद 15/08/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, शौर्य और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आप साहसी बनेंगे और जोखिम के कार्यों में माहिर होंगे। प्रसिद्धि बढ़ेगी और स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। आकांक्षाएं और ऊर्जा प्रबल होंगी; लक्ष्य की ओर केंद्रित रहेंगे। तकनीकी शिक्षा में सफल होंगे, अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे, वाहन सुख रहेगा। कार्यशक्ति में वृद्धि होगी, आत्म-विश्वास उत्तम होगा; सफलता, सम्मान और प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। स्पर्धा में जीत के लिए हमेशा प्रयासरत रहेंगे। निवेश से लाभ हो सकता है। अध्यात्म में रुचि होगी।

आपके जीवनसाथी अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। आपके पिता को धनलाभ होगा। माता को साझेदारी से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए अप्रत्याशित लाभ, यात्रा, अप्रत्याशित खर्चे, कार्यक्षेत्र में बाधाओं का संकेत है।

आपकी संतान को शत्रुओं पर विजय मिलेगी, परीक्षा में सफल होंगे, स्वास्थ्य उत्तम होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय उत्तम होगी ; प्रसिद्धि मिलेगी। व्यापारियों को पहले किये निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमानजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- गुरु - राहु
(15/08/2029 - 08/01/2032)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 08/01/2016 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में नवीं अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन है। यह 15/08/2029 को प्रारंभ होकर 08/01/2032 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, अचानक परिवर्तन और विदेशियों का कारक है।

इस अवधि में आप जायदाद या वाहन खरीद सकते हैं। घरेलू सुख उत्तम होगा। आप बली और निडर होंगे। ज्ञानार्जन उत्तम होगा; प्रसिद्ध बनेंगे। विभिन्न धर्मों के लोगों से लाभ होगा। तीर्थयात्रा हो सकती है। समाज, कार्यक्षेत्र और व्यवसाय से लाभ होगा। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। प्रसिद्धि मिलेगी। धर्म और अध्यात्म में रुचि होगी। दान-धर्म में मन लगेगा।

आपके जीवनसाथी कार्यक्षेत्र में तरक्की करेंगे। आपके पिता को अप्रत्याशित लाभ होगा। माता का धनार्जन उत्तम होगा। आपके भाई-बहनों के लिए धन, उत्तम शिक्षा, इच्छाओं

की पूर्ति, सम्मान का संकेत है।

आपकी संतान को वांछित परिणाम के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो यात्राएं हो सकती हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो समृद्धि बढ़ेगी आय अच्छी होगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा। व्यापारियों का लाभ बढ़ेगा; व्यस्त रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छाती की मामूली शिकायतों को अनदेखा न करें। अरिष्ट से बचाव के लिए राहु मंत्र का जाप करें।

ॐ रां राहवे नमः